प्राचीन बौद्ध शिक्षण संस्थानः एक अध्ययन

अनीता यादव,
शोधार्थी, इतिहास विभाग
सिंघानियां विश्वविद्यालय

शोध–आलेख सारः– शिक्षण संस्थान किसी भी राष्ट्रिय की प्रगति के प्रतिबिम्ब होते हैं। भारत में प्राचीन काल में शिक्षा का धर्म के अंग के रूप में विशेष महत्व था। प्राचीन भारत की बौद्ध शैक्षणिक संस्थाओं ने भी इतिहासकारों को आकर्षित किया।

मुख्य शब्दः– बौद्ध शिक्षा, नालन्दा, विक्रमशिला, वल्लभी,

ब्राह्मणीय शिक्षा की तरह बौद्ध शिक्षा का दायरा किसी वर्ण–जाति सीमा में बंधा हुआ नहीं था। बौद्ध शिक्षा में संस्कृत भाषा के अतिरिक्त जनसाधारण की क्षेत्रीय भाषाओं को स्थान मिला, जिसके कारण बड़ी संख्या में लोग प्रभाव में आए। आरम्भिक बौद्ध शैक्षणिक संस्थानों में भी शिक्षा का प्रारम्भ ब्राह्मणों के उपनयन संस्कार के समान ''पव्वज्जा'' से होता था जो विद्यार्थी के दूसरे जन्म के ही समान था, लेकिन उपसम्पदा के बाद वह संघ का स्थाई सदस्य बना लिया जाता था। परन्तु जब बौद्ध शिक्षण संस्थान अपनी प्रारम्भिक अवस्था से ऊपर उठकर पूर्व मध्यकाल में पहुँचे तो उनका आकार महाविद्यालय और विश्वविद्यालयों के समान हो गया।[1] बौद्ध शिक्षा में प्रारम्भिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा की एक श्रृंखला सी बन गई।[2] बौद्व धर्म के प्रसिद्व शिक्षण संस्थानों का वर्णन इस प्रकार है।

नालन्दाः– नालन्दा बौद्ध धर्म का प्रमुख केन्द्र रहा क्योंकि महात्मा बुद्ध ने भी इस स्थल की कई बार यात्रा की थी। परन्तु गुप्त शासक कुमारगुप्त महेन्द्रादित्य ने बौद्ध धर्म के विकास तथा स्थायित्व के लिए कई ऐसे काम किए, जिसे सम्राट अशोक ने भी नहीं किया। यह काम था नालन्दा में बौद्धधर्म की शिक्षा के लिए विश्वविद्यालय की स्थापना जिसके कारण यह केन्द्र विश्वप्रसिद्ध हो गया। फाह्यान को छोड़कर ह्यूनसांग, इत्सिंग आदि सभी चीनी यात्री इस विश्वविद्यालय का वर्णन अपने विवरणों में करते हैं।[3] नालन्दा विश्वविद्यालय बौद्ध शिक्षा के लिए अलग महत्त्व रखता है। यह संस्थान मुख्यतः बौद्ध सम्प्रदाय का शिक्षण केन्द्र था। परन्तु उसने 5वीं शताब्दी से लेकर 13वीं शताब्दी तक देश–विदेश के विभिन्न स्थलों और सम्प्रदायों के लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया। नालन्दा में बौद्ध साहित्य, दर्शन के अतिरिक्त अन्य धर्मों के साहित्य, दर्शन और अन्य आवश्यक विषयों का भी अध्ययन कराया जाता था।[4] नालन्दा विश्वविद्यालय ने केवल भारतीय विद्यार्थियों बल्कि विदेशी

विद्यार्थियों को भी अपनी ओर आकर्षित किया। नालन्दा विश्वविद्यालय बौद्ध महायान सम्प्रदाय का केन्द्र होने के बावजूद वहॉ पर अन्य धर्मों के साहित्य और दर्शन का भी अध्ययन कराया जाता था।[5] इस तरह, इस विश्वविद्यालय ने भारतीय शैक्षिणक स्तर को बढ़ाया परन्तु 13वीं शताब्दी में बख्तियार खिलजी ने यहॉ आक्रमण कर इसे नष्ट कर दिया और इसे इतिहास के गर्त में भेज दिया।

विक्रमशिलाः– विक्रमशिला पूर्व मध्य काल में बौद्ध महायानी शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था जिसकी स्थापना पाल वश के शासक ने 9वीं शताब्दी में की थी। धर्मपाल के बाद के सभी शासको तथा सेन शासकों ने भी विक्रमशिला विश्वविद्यालय को अनुदान दिए। फिर भी अपने 400 वर्षों के इतिहास में इस विश्वविद्यालय ने बौद्ध शिक्षा और धर्म को देश–विदेश में फैलाया।

वल्लभीः– प्राचीनकाल में बल्लभी व्यापार का प्रसिद्ध केन्द्र था तथा एक सम्पन्न नगर था परन्तु एक बौद्ध शिक्षण संस्थान के रूप में वल्लभी का आरम्भ 8वीं शताब्दी ई. में आरम्भ हुआ और बाद की शताब्दियों में यह अपनी अर्न्तराष्ट्रीय प्रसिद्धि पर पहुॅचा। यहॉ धर्म, अर्थशास्त्र, नीति, कानून, चिकित्सा शास्त्र आदि प्रमुख अध्ययन के विषय थे। यहॉ पर विशाल पुस्तकालय भी था। इस विश्वविद्यालय को राजा तथा सम्पन्न लोग उदारपूर्वक सहायता देते थे। यहॉ पर बौद्ध दर्शन शिक्षा को सम्पूर्ण संरक्षण मिला परन्तु 8वीं शताब्दी में वल्लभी पर अरबों का आक्रमण हुआ, जिसमें वह पूर्ण रूप से नष्ट हो गया। फिर बाद में मैत्रक शासकों ने उसे पुनर्जीवित किया और ये पुनः हुए मुस्लिम आक्रमणों तक यह विश्वविद्यालय प्रगति करता रहा।

बौद्ध शिक्षा के क्षेत्र में विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त कुछ महाविद्यालयों के नाम भी मिलते हैं।[6] जैसे जगदल्ल महाविद्यालय जिसकी स्थापना पाल नरेश रामपाल ने बंगाल के बरेन्द्रा जिले में की थी इसे बाद में भी अनेक शासकों व व्यापारियों द्वारा अनुदान मिलते रहे। परन्तु बंगाल पर मुस्लिम आक्रमणों के समय इस महाविद्यालय को नरसंहार के बाद नष्ट कर दिया गया। फिर भी इस विश्वविद्यालय ने भारतीय बौद्ध शिक्षा एवं संस्कृति को सम्पूर्ण बढ़वा दिया।

ओदंतपुरी महाविद्यालय भी एक प्रमुख महाविद्यालय था जिसकी स्थापना 8वीं शताब्दी में प्रथम पाल शासक गोपाल ने पाटलिपुत्र के समीप की थी। बाद में पाल शासकों, फिर सेन शासकों ने भी आवश्यकता अनुसार यहॉ निर्माण कार्य कराए। इस महाविद्यालय के साहित्यिक वर्णनों को आज पुरातत्व के विद्वानों के द्वारा भी सत्य बताया जाता है।[7] यहॉ भी बौद्ध दर्शन, साहित्य की शिक्षा दी जाती थी ताकि विश्वविद्यालय स्तर पर विद्यार्थी शोध कार्य कर सके। परन्तु 13वीं शताब्दी में मुस्लिम

आक्रमणकारियों ने इसे भी नष्ट कर दिया जिनकी जानकारी मध्यकालीन मुस्लिम इतिहासकार ''मिनहास–उस–सिराज'' की कृति तबकाते नासिरी से प्राप्त होती है।[8]

वैसे मुस्लिम आक्रमणकारियों ने बौद्ध विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों को नष्ट तो किया परन्तु इन शैक्षणिक संस्थानों की उपयोगिता को नहीं भुलाया जा सकता। इन्होंने शिक्षा को बढ़ावा दिया और विश्व स्तर के विद्यार्थियों को अपनी तरफ आकर्षित किया। इन्होंने पूर्व मध्यकालीन भारतीय सांस्कृतिक धर्म, राजनीतिक और आर्थिक आदि के पहलुओं को विदेशों के साथ जोड़ा जिसके कारण वहॉ भारतीय संस्कृति का प्रचार हुआ जैसे श्रीलंका, जापान, चीन, नेपाल, तिब्बत आदि।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. एच. त्रिपाठी – बौद्ध धर्म और विहार, पृ. 199
2. राधा कुमुद मुखर्जी – एन्शिएन्ट इंडियन एजूकेशन, पृ. 557
3. पुष्पा नियोगी – प्राचीन बिहार और बंगाल में बौद्ध विहार, पृ. 558
4. राधा कुमुद मुखर्जी – एन्शिएन्ट इंडियन एजूकेशन, पृ. 567
5. पुष्पा नियोगी – प्राचीन बिहार और बंगाल में बौद्ध विहार, पृ. 559
6. राधा कुमुद मुखर्जी – एन्शिएन्ट इंडियन एजूकेशन, पृ. 557
7. ए.एस. अल्टेकर – एजुकेशन इन इंडिया, पृ. 117
8. वही, पृ. 122